रिकॉर्डः– मरना तेरी गली में..... ओम् शांति प्रातः क्लास 6/5/1967
बच्चों ने गीत का अर्थ सुना कि बाबा, हम आपकी रुद्रमाला में पिरोय ही जावेंगे। यह गीत तो भक्तिमार्ग के बने हुए हैं। जो भी दुनिया में सामग्री है, जप–तप, माथा टेकना, भटकना, यह सब है भक्तिमार्ग, रावण राज्य। ज्ञान राम राज्य। ज्ञान को कहा जाता है नॉलेज, पढ़ाई। भक्ति को पढ़ाई नहीं कहा जाता है। उसमें कोई उद्देश्य नहीं होता कि हम क्या बनेंगे। भक्ति पढ़ाई नहीं है। राजयोग सीखना यह पढ़ाई है। पढ़ाई एक जगह स्कूल में पढ़ी जाती है। भक्तिमार्ग में तो दर–2, पढ़ाई कुछ भी नहीं। भक्ति माना ही दर–2 के धक्के। पढ़ाई माना पढ़ाई। तो पढ़ाई पूरी रीति पढ़नी चाहिए। बच्चे जानते हैं कि हम स्टूडेंट हैं। बहुत हैं जो अपने को स्टूडेंट नहीं समझते हैं, क्यों? क्योंकि पढ़ते नहीं हैं। ना बाप को बाप समझते, ना शिवबाबा को सद्गति दाता समझते हैं। फिर भी बैठे हैं। शरण ली हुई है। ऐसे भी हैं। बुद्धि में कुछ बैठता ही नहीं है। राजधानी स्थापन होनी है ना। उसमें कई प्रकार के चाहिए। तुमको मालूम है इस दुनिया में सबसे कम डर्टी ते डर्टी पद कौन से मनुष्य का है। सबसे जास्ती दुर्गति को कौन पाए हुए है? (वैश्याएँ)। सबसे जास्ती दुर्गति को पाए हुई हैं वैश्याएँ; क्योंकि पतित हैं ना। सबसे जास्ती पतित हैं वैश्याएँ और लम्पट, जो कि अपनी स्त्री को छोड़ कर फिर बाजारी कुत्ते बन जाते हैं। उनको ही लम्पट कहते हैं। ऐसे बहुत होते हैं। बाप आए ही हैं पतितों को पावन बनाने। इस दुनिया को तो नाम ही है वैश्यालय। सबसे जास्ती है यह वैश्याएँ। इससे ही पतित बनते हैं ना। मेहतरों का तो वो धंधा ही है। पतित उनको कहा जाता है तब ही तो बाप को पुकारते हैं कि आओ। अब बाप कहते हैं पावन बनो। सबसे गंदा धंधा है वैश्याओं का। एक/दो को काम कटारी से घायल करते हैं; इसलिए ही बाप कहते हैं पवित्र बनो। मेहतरों को भी यह समझाना है कि पवित्र बनो। याद करो बाप को। हर एक को पैगाम देना है बाप का। इस समय भारत ही वैश्यालय है। शिवालय की अगेस्ट है वैश्यालय। वो सालवेंट, वो इनसालवेंट। अब दोनों ताज नहीं है। यह भी तुम बच्चे ही जानते हो। अब पतित–पावन बाप कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। याद में ही मेहनत है। बहुत थोड़े हैं जो याद में रहते हैं। भक्तिमाला भी थोड़ों की ही है ना। ....भक्त, नारद, मीरा आदि का नाम है। इसमें भी सभी तो नहीं आकर समझेंगे। कल्प पहले जिन्होंने पढ़ा है वो ही आते हैं। कहते हैं– बाबा, हम आप से कल्प पहले भी मिले थे पढ़ने अथवा याद की यात्रा सीखने। अभी बाप आए ही हैं तुम बच्चों को ले जाने। समझते हैं तुम्हारी आत्मा पतित है; इसलिए ही बुलाते भी हैं कि आकर पावन बनाओ। अब बाप कहते हैं मुझे याद करो और पवित्र बनो। बाप पढ़ाते हैं फिर साथ में भी ले जावेंगे। बच्चों को अंदर में गुप्त खुशी होनी चाहिए। बाप पढ़ा रहे हैं। कृष्ण को बाप नहीं कहेंगे। कृष्ण को पतित–पावन नहीं कहेंगे। यह किसको भी पता नहीं है कि बाप किनको कहा जाता है। तो वो फिर ज्ञान कैसे ले दे सकते हैं? यह तुम्हीं जानते हो। बाप ही अपना परिचय बच्चों को देते हैं। नए–2 कोई से बाप नहीं मिल सकते। बाप कहेंगे, सन शोज़ फादर। बच्चों को ही बाप का (शो) करना है। कोई से भी बाप को मिलने की बात करने की दरकार नहीं है। भल इतना समय बाबा बॉम्बे–दिल्ली गए। नयों–2 से मिलते रहे हैं। ड्रामा में था। नए–2 आते थे। मिलेट्री के लिए भी बाबा ने समझाया है कि उनका भी उद्धार तो करना है ना। नहीं तो दुश्मन वार करेगा। सिर्फ बाप को याद करना है। गीता में है कि जो युद्ध के मैदान में शरीर छोड़ेंगे वो सतयुग में आवेंगे; परन्तु ऐसे तो जा नहीं सकते हैं। स्वर्ग स्थापन करने वाला भी जब आवे तब जा सके ना। अभी तुम बच्चे पाँच विकारों पर युद्ध करते हो। बाप कहते हैं अशरीरी भव। अपने को आत्मा निश्चय कर मुझे याद करो। और कोई ऐसे कह नहीं सकते हैं। सर्वशक्तिवान सिवाय बाप के कोई को कह नहीं सकते हैं। ब्रह्मा को वा विष्णु–शंकर को नहीं कह सकते। ऑलमाइटी एक ही बाप है। वर्ल्ड ऑलमाइटी अथॉरिटी एक बाप को ही कहा जाता है। यह जो साधु–संत हैं वो हैं (अधूरी मुरली)